असम के जनजातीय समाज में त्योहारों की प्रासंगिकता

डिम्पी बरगोहाई

व्यक्ति समष्टि से से ही समाज निर्मित होता है। समाज अपनी गतिमयता में परंपरा और संस्कृति की विरासत को लेकर आगे बढ़ती है। साहित्य समाज का ही दर्पण है क्योंकि साहित्य में समाज ही दिखाई देता है। भारतवर्ष प्राचीनकाल से ही सभ्यता-संस्कृति के लिए विश्वविख्यात। उसी भारत का एक प्रांत असम भी सभ्यता-संस्कृति-परंपरा से परिपूर्ण है। विविध जाति- जनजाति, सभ्यता-संस्कृति की अनेक स्वरूप असम के सांस्कृतिक रुपरेखा की झलक है। भारत के पूर्वोत्तर में बसे हुए 'असम' भूमि बहुरंगीन संस्कृति की उपजीव्य है। जाति-जनजाति तथा लोकाचार-लोक परंपराओं के सम्मिलित स्वरूप ही असम के सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र की गतिमयता को सदा के लिए प्रवाहित करने की प्रेरणा बनी। अपने संस्कृति को स्वाभिमान मानते हुए परंपरागत जीवन-संस्कृति को सामाजिक जीवनादर्श में भलीभांति निभाती है। मनुष्य द्वारा निर्मित समाज में जहां व्यक्तिसमूह रीति-नीति, आचार-संहिताओं के प्रतिपालक हैं, वहीं समय-समय पर अपने जीवन की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए सामूहिक रूप से पर्व-त्योहारों को मनाते हैं।

त्योहार मूल रूप से सामाजिक आनंद के अभिव्यक्ति का माध्यम है जहाँ सामूहिक लोकधर्म ही प्रमुख है। कोई भी जाति-जनजाति की अपनी भौगोलिक-सामाजिक तथा ऐतिहासिक धरातल के आधार पर ही उस जाति या जनजाति की लोकोत्सव-परंपरा के स्वरूप को समझ सकते हैं। दरअसल पर्व-त्योहारों के प्रमुख विशेषता ही सार्वजनिक आनंद और लोकसमाज के मिलनसेतु हैं। मूलतः "लौकिक पर्व-त्योहार ग्राम्यांचल के लोगों के द्वारा प्रतिवर्ष मनायी जाती है। इन्हीं लौकिक और सामाजिक पर्व-त्योहारों को समाज में धर्मनिरपेक्ष पालन करते है। इसमें कोई संदेह नही कि धर्म हो या समाज, जिसमें भी ये पर्व-त्यौहार सम्मिलित हो, सभी ग्राम्य जीवन के लिए सुखदायक है।"[1]

बिहू असम के प्रमुख जातीय त्योहार है। रंगाली बिहू, माघ बिहू, काति बिहू को सामाजिक लोकाचारों में पालन किया जाता है। बिहू असम के सभी जाति-जनजाति के सांस्कृतिक समन्वयता का प्रतीक है। दरअसल "संस्कृति भी नदी की गति की धारावाहिकता को लिए हुए है।"[2] असम में बसे जाति-जनजातियों की संस्कृति में समन्वयकता के स्वरूप का आभास होता है। बोड़ो जनजाति के लोगों में 'वैशागु' उत्सव असमिया जाति 'बिहू' के ही समपर्याय में

मनाया जाता है। रंगाली बिहू के समय असमिया समाज में पारंपरिक प्रथा को मनाते हुए गाते हैं- लाऊ खाओ वेंगेना खाओ, दिन-व-दिन बढ़ते जाओ, वही वैशागु त्योहार में भी इन गीतों को अपने भाषा में गाते में 'पिचु' (बिहू) है, जिन्हें बड़ी खुशी से मनाते हैं, "जोनबिल मेला पहाड़ी और मैदानी दोनों में बसे तिवा जनजाति के सांप्रीतिक मिलनस्थली है। पहाड़ी-मैदानी दोनों प्रांत के तिवा लोगों के बीच प्रचलित बिनिमय प्रथा इस मेले की मुख्य विशेषता है।"[3] बरत पूजा, जंगखंग पूजा आदि इस जनजातीय समुदाय के प्रमुख त्योहार हैं।

बरत पूजा-

मिचिंग जनजातीय समाज में वसंतकालीन त्योहारों में 'आलि-आइ-लिगंग' प्रमुख हैं। देउरी जनजातीय समाज कृषिकर्मों में निपुण हैं। ये लोग अपने खेतों में धान उगाने के समय और धान काटने के समय में अपनी धार्मिक विश्वास और रीति-परंपराओं के साथ कई उत्सवों का पालन करते हैं। असम के प्रमुख जनजातियों में सोनोवाल कछारी, गारो, हाजंग, कार्वि, दिमासा आदि भी हैं। इन जनजातीय समाजों में उत्सवों के साथ-साथ देवी-देवता का पूजा-अर्चन एवं वंदन करने की प्रथा विराजमान हैं। प्रकृति के प्रति भक्तिभाव, पेड़-पत्थर आदि पर किए गए पूजा के प्रति आस्था इन समाजों में मौजूद हैं। सभी जनजातीय समाज में मनाए जाने वाले त्योहार सामूहिक श्रम व अस्तित्व की अभिव्यक्ति हैं।

"पूर्वोत्तर भारत रंगारंग लोक संस्कृति की धरोहर है। असम तथा पूर्वोत्तर भारत की सभी जातियों, उपजातियों, जनजातियों की अपनी संस्कृति है। इन संस्कृतियों के साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति का भी संपर्क है परंतु आज शेष भारत के लोगों का इन पूर्वोत्तर की संस्कृतियों के साथ परिचय न के बराबर है जो भारतीय एकता की कमजोर कड़ी है इसके कारण इनके मध्य भावनात्मक संपर्क का भी अभाव है।"[4]
त्योहार इन संस्कृतियों तथा असम भूमि की प्राण है। असम में बसे जनजातीय लोगों के द्वारा मनाये जाने वाले इन त्योहारों के साथ साथ जनजातीय समाज के सामाजिक-आर्थिक व सांस्कृतिक दिशा की भी गहरी आस्था बनी हुई है। असल में सामाजिक त्योहार एक दर्पण की तरह सामजिक जीवनबोध, शिल्पचेतन सौंदर्यबोध, धार्मिक आस्था तथा सांस्कृतिक जीवनचर्या को प्रतिबिंबित करती है।

किसी भी जाति-जनजाति के अपनी परंपरा तथा संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास ही त्योहारों के पालन में मुख्य भूमिका निभाती है। लोकगीत, लोकनृत्य, लोककला आदि के जरिए जीवन की गतिशीलता को ताउम्र बनाए रखने हेतु समय-समय पर उत्सवों का मनाने में इन जनजातीय समाज की एक बड़ी उपलब्धि है। साथ ही अपने पारंपरिक सभ्यता-संस्कृति के दर्शन-प्रदर्शन के जरिए ऐतिहासिक धारावाहिकता को अक्षुण्ण रखने में मदद करती है। अतः असम की जनजातीय त्योहारों की व्यापक परिदृश्य में लोक-परंपरा तथा लोक-विश्वासों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. असमर लोर्क-संस्कृति, बिरिन्सी कुमार बरुवा, गुवाहाटी 1967, पृ. 124

2. असमर संस्कृति, डॉ. लीला गोगोई, बनलता प्रकाशन, 2012, पृ. 6

3. तिवा जनगोष्ठीर लोक-संस्कृति, बेबी मणि गगोई, पृ. 163

4. पूर्वोत्तर भारत के राज्य, माता प्रसाद, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली- 1998, पृ. 5

संपर्क : शोधार्थी, हिंदी विभाग,

राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर,

अरुणाचल प्रदेश